

# SHRI SAILEELA श्री साई लीला

\* Year 18 \* Issue 6 \* November-December 2018 \* ₹ 8/-

\* वर्ष १८ \* अंक ६ \* नवम्बर-दिसम्बर २०१८ \* ₹ ८/-



गुरुवार, दिनांक १८ अक्टूबर, २०१८

# श्री साईं पुण्यतिथि उत्सव – २०१८ प्रारम्भ दिन (बुधवार, दिनांक १७.१०.२०१८)



प्रारम्भ दिन वीणा (संस्थान के उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम), 'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ (संस्थान के विश्वस्त श्री भाऊसाहेब वाकचौरे), श्री साईं की तस्वीर (विश्वस्त अॅड. मोहन जयकर व श्री बिपीनदादा कोल्हे) की शोभायात्रा समाधि मंदिर से द्वारकामाई की ओर; साथ में संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, विश्वस्त तथा शिर्डी की नगराध्यक्षा सौ. योगिताताई शेलके, उप जिलाधिकारी श्री धनंजय निकम व श्री मनोज घोडे पाटिल, प्रशासकीय अधिकारी श्री सूर्यभान गमे, ग्रामवासी और साईं भक्त...

'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ के अखण्ड पारायण का शुभारम्भ – संस्थान के विश्वस्त अॅड. मोहन जयकर...



संस्थान के उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम व उनकी सुविद्य पत्नी सौ. प्रिया कदम के हाथों श्री साईं बाबा की विधिवत् पादपूजा...

# SHREE SAIBABA SANSTHAN TRUST, SHIRDI

## Management Committee

Dr. Suresh Kashinath Haware (Chairman)	Sri Chandrashekhar Laxmanrao Kadam
Smt. Rubal Prakher Agarwal, I.A.S. (C.E.O.)	(Vice Chairman)
Dr. Manisha Shamsunder Kayande (Member)	Adv. Mohan Motiram Jaykar (Member)
Sri Bhausahab Rajaram Wakchaure (Member)	Dr. Rajendra Rajabali Singh (Member)
Sri Ravindra Gajanan Mirlekar (Member)	Sri Bipindada Shankarrao Kolhe (Member)
Sri Amol Gajanan Kirtikar (Member)	Sou. Yogitai Shelke (Member)

Sri Dhananjay Nikam (Deputy Collector)	Sri Manoj Ghode Patil (Deputy Collector)
Sri Babasaheb Ghorpade (Deputy Executive Officer - in charge)	

Internet Edition - URL:<http://www.shrisaibabasansthan.org>

# श्री साई लीला

वर्ष १८ अंक ६

सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी  
श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी

कार्यकारी सम्पादक : विद्याधर ताठे

# SHRI SAI LEELA

Year 18 Issue 6

Editor : Chief Executive Officer  
Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

Executive Editor : Vidyadhar Tathe

## अंतरंग

- ❖ “... कलियुग में सगुण साकार अवतार हुआ है।... स्वामी दत्त दिगंबर का अवतरण हुआ है।... ४
- ❖ मा. प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की शिर्डी भेंट ५
- ❖ Parayan of Chapter 20 of Shri Sai Sat Charita : Dr. Subodh Agarwal 11
- ❖ Sai Baba answered our prayer by His love and care on us : Dr. M. Phani Kumar 15
- ❖ श्री साई बाबा के एकदश वचन : दास कुम्भेश १७
- ❖ साई बाबा और हनुमान : मदन गोपाल गोयल १८
- ❖ Shirdi News 20

● Cover & inside pages designed by Don Bosco and Prakash Samant (Mumbai) ● Computerised Typesetting : Computer Section, Mumbai Office, Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi ● Office : 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014. Tel. : (022) 24166556 Fax : (022) 24150798 E-mail : saidadar@sai.org.in ● Shirdi Office : At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar. Tel. : (02423) 258500 Fax : (02423) 258770 E-mail : 1. saibaba@shrisaibabasansthan.org 2. saibaba@sai.org.in ● Annual Subscription: ₹.50/- ● Subscription for Life : ₹. 1000/- ● Annual Subscription for Foreign Subscribers : ₹. 1000/- (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) ● General Issue : ₹. 8/- ● Shri Sai Punyatithi Annual Special Issue : ₹. 15/- ● Published and printed by the Chief Executive Officer, on behalf of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and at Taco Visions Pvt. Ltd., 105 A, B, C Government Industrial Estate, Charkop, Kandivali (W), Mumbai - 400 067 respectively. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.

## निमित्तमात्र...



“... कलियुग में सगुण साकार अवतार हुआ है।...  
स्वामी दत्त दिगंबर का अवतरण हुआ है।...”

कलियुग में १९वीं सदी के उत्तरार्ध में धरातल पर शिर्डी में प्रथम बार अवतरित एक दिव्य, तेजस्वी, आत्मस्वरूप में निमग्न, त्याग मूर्ति, अखिल ज्ञान से सम्पन्न फ़कीर वेष धारण किये युवा को देख कर हैरान से रह गये शिर्डी ग्रामवासियों ने उसका परिचय पूछा; लेकिन उसने अपना मौन बिल्कुल नहीं छोड़ा, वह अपनी समाधि में ही लीन रहा। कुछ दिन बाद वह अदृश्य हो गया।...

शिर्डी में जब उसका पुनरागमन खंडोबा मंदिर के सामने दिखाई दिया, तो मंदिर के पुजारी म्हालसापति को उसमें ईश तत्व का दर्शन हुआ; और उन्होंने, “आओ साई!” पुकार कर उसका हार्दिक स्वागत किया।... यही उस फ़कीर का परिचय बन गया।...

साई की विशेष प्रसिद्ध एकादश वचनोक्तियों में से एक है - “**जो भजेगा मुझे जिस भाव से, पायेगा वह वैसा ही रूप मुझमें।**” इस साई वचनोक्ति का अनुभव अनेकों ने साई अवतार अवधि में किया और उनके समाधिस्थ होने के बाद इसका अनुभव करने वालों की संख्या में दिन-प्रति-दिन बढ़ोतरी ही होती जा रही है।...

साई अवतार के समय लगभग ९५ वर्ष के भगवान् पंढरीनाथ विठोबा के परम भक्त गौली बुवा और मुम्बई के उच्च न्यायालय में अधिवक्ता बालाराम धुरन्धर को उनके भाव के अनुसार साई बाबा में विठोबा के दर्शन हुए।... साई भक्त तात्यासाहेब नूलकर के मित्र डॉक्टर पंडित को साई बाबा में उनके भाव के अनुसार उनके गुरु काका पुराणिक के दर्शन हुए।... कर्मनिष्ठ, अग्निहोत्री ब्राह्मण, छः शास्त्रों में, ज्योतिष तथा सामुद्रिक शास्त्र में पारंगत नासिक के मुले शास्त्री को बाबा के स्थान पर अपने कैलासवासी गुरु घोलप स्वामी विराजमान दिखाई दिये।... एक मामलतदार साई भक्त के डॉक्टर मित्र को साई बाबा में उनके इष्ट दैवत श्री राम के दर्शन हुए।... शिव भक्त मेघा को साई में शिव शक्ति का अनुभव हुआ।... मद्रासी भजनी मंडल में सम्मिलित एक प्रधान महिला को साई बाबा में

(पृष्ठ १० पर)

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी की ओर से  
श्री साई पुण्यतिथि  
मा. प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का हार्दिक स्वागत

समापन दिन



संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे



उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम



मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल



विश्वस्त श्री बिपीनदादा कोल्हे



विश्वस्त अधिवक्ता मोहन जयकर



विश्वस्त डॉ. राजेन्द्र सिंग



विश्वस्त श्री भाऊसाहेब वाक्चौरै



विश्वस्त तथा शिर्डी की नगराध्यक्षा सौ. योगिताताई शेलके



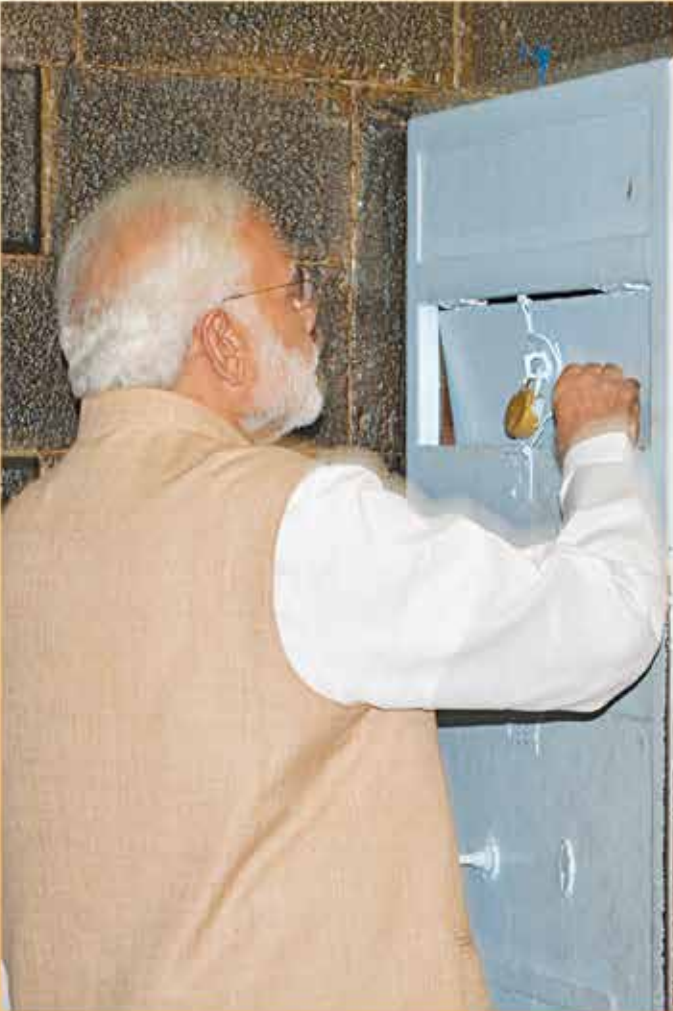
मा. प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की शिर्डी भेंट - कुछ विशेष झलकियाँ



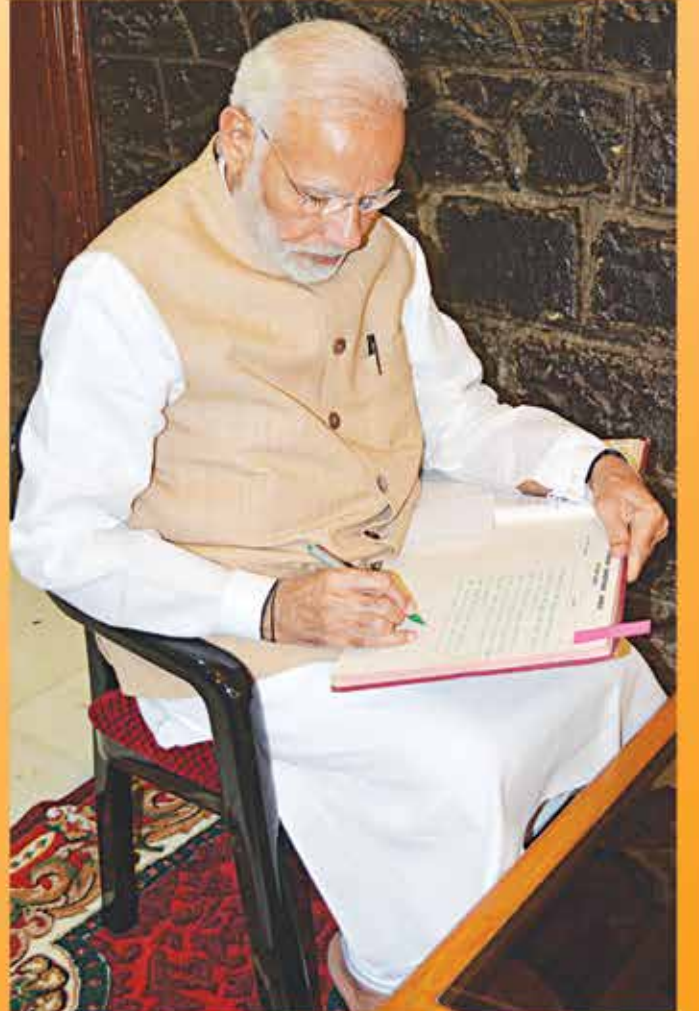
... नतमस्तक



... श्री साई की आरती में लीन



... दक्षिणा दान



... अभ्युक्ति



मा. प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी समेत महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री सी. विद्यासागर राव, मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडणवीस, अहमदनगर ज़िला के अभिभावक मंत्री प्रा. राम शिंदे, संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे, उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, विश्वस्त - अधिवक्ता मोहन जयकर, श्री भाऊसाहेब वाक्चौरे, डॉ. राजेन्द्र सिंग, श्री बिपीनदादा कोल्हे और विश्वस्त तथा शिर्डी की नगराध्यक्षा सौ. योगिताताई शेलके, उप ज़िलाधिकारी श्री धनंजय निकम व श्री मनोज घोडे पाटिल, उप कार्यकारी अधिकारी श्री बाबासाहेब घोरपडे...

... श्री साई समाधि शताब्दी ध्वजावतरण





“श्री साईं बाबा के दर्शन करके मन को असीम शांति प्राप्त हुई। श्री साईं बाबा का श्रद्धा और सबुरी का संदेश, संपूर्ण मानवता को प्रेरणा देने वाला है।

शिर्डी में सर्वपंथ समभाव का अद्भुत स्वरूप देखने को मिलता है। सभी पंथों के लोग आकर श्री साईं बाबा के चरणों में शीश झुकाते हैं। आज की वैश्विक परिस्थितियों में श्री साईं बाबा का महामंत्र ‘सबका मालिक एक’ पूरे विश्व की शांति के लिए महत्वपूर्ण है। सभी साईं भक्तों को श्री साईं बाबा का आशीर्वाद प्राप्त हो, उन्हें सुख और शांति मिले, इसी कामना के साथ मैं बाबा के चरणों में पुनः नमन करता हूँ।”

## “श्री साईं बाबा का श्रद्धा-सबुरी का संदेश, संपूर्ण मानवता को प्रेरणा देने वाला है।”

- मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी

“श्री साईं बाबा का श्रद्धा और सबुरी का संदेश, संपूर्ण मानवता को प्रेरणा देने वाला है और शिर्डी साईं बाबा संस्थान द्वारा समाज सेवा हेतु किये जा रहे शैक्षणिक, चिकित्साओं से संबंधित तथा आध्यात्मिक कार्य सराहनीय हैं,” ऐसा प्रतिपादन मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया।

शिर्डी में श्री साईं बाबा समाधि शताब्दी समारोह समापन, संस्थान की विविध परियोजनाओं का भूमि पूजन, श्री साईं बाबा समाधि शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में चांदी के सिक्के का विमोचन और प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत महाराष्ट्र राज्य में बनाये गये घरों की चाबियों का लाभार्थियों को वितरण और राज्य में अन्य लाभार्थियों के ई-गृहप्रवेश कार्यक्रम के अवसर पर वे बोल रहे थे। इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री विद्यासागर राव, मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडणवीस, केन्द्रीय रक्षा राज्यमंत्री डॉ. सुभाष भामरे, महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष श्री हरिभाऊ बागडे, ग्राम विकास मंत्री श्रीमती पंकजा मुंडे, अहमदनगर जिला के अभिभावक

मंत्री प्रा. राम शिंदे, नगर विकास राज्य मंत्री डॉ. रणजित पाटिल, ग्राम विकास राज्य मंत्री श्री दादा भुसे, महाराष्ट्र विधानसभा में विपक्ष के नेता श्री राधाकृष्ण विश्वे पाटिल, अहमदनगर जिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती शालिनीताई विश्वे पाटिल, सांसद श्री रावसाहेब दानवे, श्री दिलीप गांधी व श्री सदाशिव लोखंडे, महाराष्ट्र विधानसभा के सदस्य श्री शिवाजीराव कर्डिले, श्री बालासाहेब मुरकुटे, श्रीमती रनेहलता कोल्हे व श्रीमती मोनिका राजले, संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे, उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल और विश्वस्त श्री भाऊसाहेब वाक्चौरे, श्री बिपीनदादा कोल्हे, अधिवक्ता मोहन जयकर, डॉ. राजेन्द्र सिंग व विश्वस्त तथा शिर्डी की नगराध्यक्ष श्रीमती योगिताताई शेलके आदि मान्यवर उपस्थित थे।

मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री साईं बाबा की समाधि के दर्शन किये। उसके बाद संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे, उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल, विश्वस्त





श्री भाऊसाहेब वाक्चौरे, श्री बिपीनदादा कोल्हे, अधिवक्ता मोहन जयकर, डॉ. राजेन्द्र सिंग व विश्वस्त तथा शिर्डी की नगराध्यक्षा सौ. योगिताताई शेलके ने संस्थान की ओर से मा. प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का सत्कार किया। तदुपरान्त मा. प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के हाथों लेंडीबाग में श्री साईं बाबा समाधि शताब्दी महोत्सव के ध्वजस्तम्भ का विधिवत् पूजन कर ध्वजावतरण किया गया।

इसी तरह संस्थान की दर्शन कतार इमारत परियोजना, शैक्षणिक संकुल इमारत, १० मेगा वैंट सौर ऊर्जा परियोजना व साईं सृष्टि परियोजना का शुभारम्भ और श्री साईं बाबा

समाधि शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में श्री साईं प्रतिमा अंकित चांदी के सिक्के का अनावरण व लोकार्पण मा. प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के हाथों किया गया। प्रतिनिधिक स्वरूप एक सिक्का संस्थान की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल को दिया गया। इसके साथ ही श्री मोदी जी के हाथों प्रतिनिधिक स्वरूप प्रधान मंत्री आवास योजना के तहत १० लाभार्थियों को घरकुल प्रवेश, कलश और चाबियाँ प्रदान की गईं। इसी प्रकार श्री मोदी जी ने प्रधान मंत्री आवास योजना के तहत महाराष्ट्र राज्य के ढाई लाख लाभार्थियों का ई-गृहप्रवेश शुभारम्भ कर लाभार्थियों से





वीडियो कॉन्फरेन्स के माध्यम से बातचीत की। बातचीत के दौरान श्री मोदी जी ने कहा कि “मैं बहुत ही आनंद महसूस कर रहा हूँ कि श्री साईं बाबा समाधि शताब्दी समारोह निमित्त मुझे साईं दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ। करोड़ों लोगों की सेवा करने की और जन सेवा के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा श्री साईं बाबा के सेवा संदेश से मिलती है। पूरे समाज को एक सूत्र में बाँधने का सामर्थ्य उनके ‘सबका

मालिक एक’ के मंत्र में है।” “श्रद्धा और सखुरी रखना; साईं बाबा के आशीर्वाद आप सभी को प्राप्त हों, यही साईं चरणों में प्रार्थना,” कह कर श्री मोदी जी ने श्री साईं बाबा समाधि शताब्दी वर्ष का समापन किया।

इस अवसर पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडणवीस का समयोचित भाषण हुआ। कार्यक्रम का प्राक्कथन ग्राम विकास मंत्री श्रीमती पंकजा मुंडे ने किया।



(पृष्ठ ४ से)

उसके आराध्य दैवत सीतानाथ श्री प्रभु रामचन्द्र के दर्शन हुए।...

ऐसे कई अनुभव श्री साईं आशीर्वाद से कै. श्री गोविंद रघुनाथ दाभोलकर ऊर्फ हेमांडपत द्वारा लिखित श्री साईं सत् चरित में पढ़ने को मिलते हैं।...

इसी अनुभव श्रृंखला में एक अलग सा हट कर अनुभव भी पढ़ने को मिलता है।... साईं ने अपने अवतार रूप का प्रमाण उनके निस्सीम भक्त नानासाहेब चाँदोरकर की बेटी मैनाताई के प्रसव के समय उनकी सहायता के लिए आशीर्वाद सहित भेजी आरती में दिया है। इस आरती में कहा है - “कलियुग में सगुण साकार अवतार हुआ है।... स्वामी दत्त दिगंबर का अवतरण हुआ है।” इसीलिए साईं सगुणोपासना साईं माहात्म्य वर्णित करती है - “समस्त विश्व में व्याप्त हे साईं, आप ही दत्तावतारित रूप शिर्डी में रह कर अपने भक्तों का कल्याण कर रहे हो।” तभी तो हमें दत्त साईं के चरणों में अपना चित्त स्थिर करना है।...

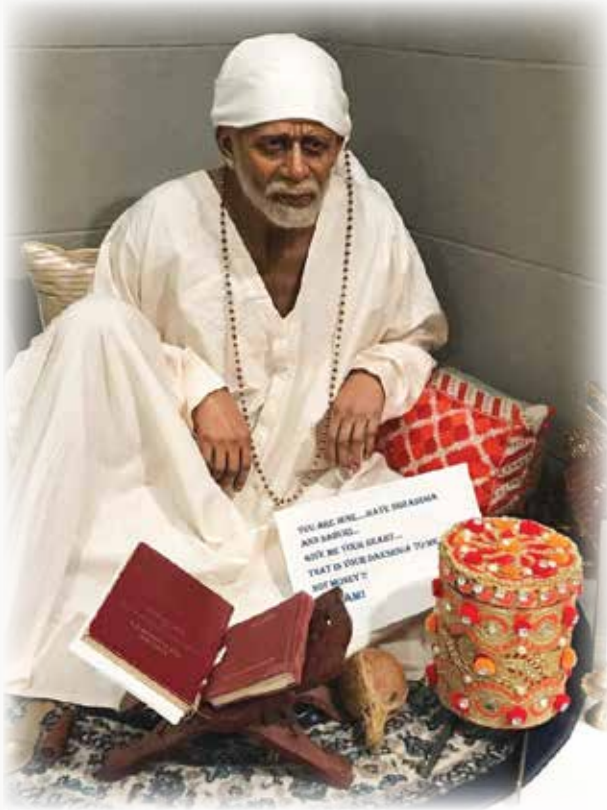
**नूतन वर्ष २०१९ के उपलक्ष्य में सभी साईं भक्तों को हार्दिक शुभकामनाएँ!**

सम्पादक

## *Parayan of Shri Sai Sat Charita Chapter 20 :* **Ishavasya Upanishad made easy by** **Shirdi Sai Baba**

**With due apologies to Rabindranath Tagore :**  
**O Baba! My writer's vanity dies in shame before Thy sight. O Master**  
**Writer! I have sat down at Thy Feet. Only let me make my life simple and**  
**straight, like a pen of reed for Thee to fill with words.**

○ Sai! Today, I prostrate myself at Your Feet, begging permission to do *Parayan* of Shri Sai Sat Charita, Chapter 20.



O my fellow Sai devotees! There will hardly be any person amongst Sai Baba's devotees, who has not heard the name of Ganapatrao Dattatreya Sahasrabuddhe, better known as Das Ganu Maharaj.

He first came to Shirdi in 1896, and took Baba's *darshan* on regular prompting of Nanasahab Chandorkar. He was born in Akolner, Ahmednagar

district in Maharashtra state, in 1868. He was a police constable; and when he first came to Shirdi, he came as the 'orderly' of Chandorkar. Besides his ambition of becoming a sub inspector, he was a skilled composer of village dramas and *lavani* poetry. He - a learned man - was especially good at *kirtans*. He had a fine metallic voice and was a very able performer. He was chiefly responsible for the spread of Sai Baba's name and fame in Maharashtra



through his *kirtans*.

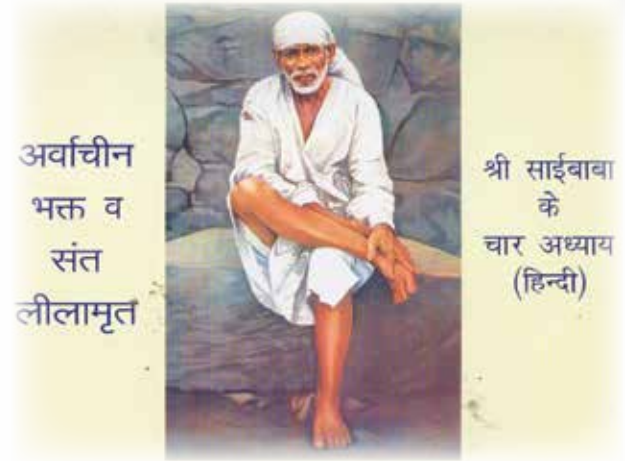
In the year 1903 Das Ganu announced his resignation from his job, the culmination of a career in policing. He made Sai's Lotus Feet as his spiritual abode - quite literally and figuratively thereafter.

Sai Baba gave a definite spiritual orientation to Das Ganu's life. The latter wrote commentaries on religious texts, such as Dnyandev's Amritanubhav, Narada's Bhakti-Sutra, and so forth. By Baba's



grace and inspiration, he started writing metrical compositions. Amongst his compositions are Bhakta-Leelamrit, Sant-Kathamrit (life stories of modern saints) and Sai Stavanmanjari.

The Bhakta-Leelamrit, cited above, carries three full chapters depicting a glowing account of Sai Baba. The Sant-Kathamrit, in its 57<sup>th</sup> Chapter, sets out in detail Baba's discourse on Dnyan given to Nanasaheb Chandorkar on one occasion. It is a veritable mine of *Advait* philosophy.

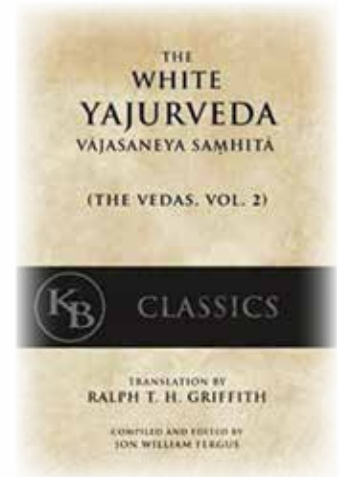


Next Das Ganu was anxious to render even a Sanskrit Upanishad, namely, Isha Upanishad or Ishavasya Upanishad, into Marathi.

The Isha Upanishad or Ishavasya Upanishad forms the 40<sup>th</sup> Chapter in the Vajasaneya Samhita of Shukla-Yajur Ved. Because of this reason, it is also called as the 'Shukla-Yajur Vediya Samhita



Upanishad' and as the 'Vajasaneyi Samhita Upanishad'. Inasmuch as it occurs in the *mantra* portion, or the *Samhita* part of the *Vedas*, it is also called the Mantra Upanishad. Although this *Upanishad* has only 18 verses, these 18 verses are as important as the 18



chapters of the Bhagvad Gita.

Das Ganu named his proposed critical explanation or interpretation of the Ishavasya Upanishad as 'Ishavasya Bhavartha Bodhini'. He worked on it strenuously for a long time, maintaining effort and interest, despite failure, adversity, boredom, and plateaus in progress. Ultimately he had proceeded far into it when suddenly certain doubts began to assail him. He discussed the matter with a few academicians with a view to drive these doubts away. Some of them were dispelled, but not all. A crucial doubt related to the Verse : 1 of the Ishavasya Upanishad still remained largely unresolved, and the peace of Das Ganu started getting disturbed.

At about this time, he happened to go to Shirdi. Sai Baba, amusingly, queried about his well-being. Das Ganu desperately flung back to say that at Baba's instance, he had taken upon himself the task of the elucidation of the substance of the Isha



Upanishad; but stumbled on the road, and his mind was uncertain whether he had understood the true import of the *Upanishad*. Baba then asked him what his difficulty was. Das Ganu explained the stumbling block and devotedly looked forward to getting Baba's assistance.

Sai told Das Ganu that his doubt would be swept away by the maid-servant of Kakasaheb Dixit at Vile-Parle, when he would go there.

Das Ganu went to Kakasaheb Dixit's bungalow at Vile-Parle. He slept there. When he woke up in the morning, he heard the maid-servant of tender age, dressed in tattered clothes, singing a song in great joy, whilst washing Kakasaheb's household utensils. The subject matter of the song was a red raw silk *saree* with green red and gold fancy and brocade borders!

How soft, light, beautiful and elegant it was! How attractive and distinctive was its embroidery!

The emotional tone and content of the song of this little maid-servant sparked pity in Das Ganu's heart for her. He gifted her a *saree*.

She wore it just one day, and went about enjoying it. The very following day, she cast it aside, again wore her tatters and again began to sing joyously the song about the red *saree* and its beauty.



What a wonderful visual representation of the essence of the Isha Upanishad! It brought a wisp of fresh air to all the disparaging doubts of Das Ganu, opening the portals of his confused mind.

Das Ganu was confronted with a concrete situation, which, at first sight, appeared unrelated to his logical difficulties. The point at stake, in Das Ganu's mind, was "how human happiness or sorrow arose." Did it depend on external environments or was it embedded in the human mind itself?

Das Ganu got the answer to the doubt he had in his mind. The comprehension problem that affected his efforts to elucidate the substance of the Ishavasya



Upanishad was now fixed.

The *rishi* or the sage of this Ishavasya Upanishad is Dityang Aadarvanar. Dityang Aadarvanar is giving advice to his son, who is a normal householder. It appears that his son is seeking guidance on whether to pursue worldly success or to renounce everything and become focused only on Self. It almost appears that the son came to the father, feeling that the others were being very successful in the worldly matters and he is not sure if he should try to compete there or join his father's path of renunciation.

So, here goes the advice of an enlightened sage to his son :

ॐ ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।  
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥  
**om ishavasyam idam sarvam  
yatkichcha jagatyam jagat,  
tena tyaktena bhunjitha,  
ma gridhah kasyasvidhanam**

The Ishavasya Upanishad starts with the phrase : 'Ishavasyamidamsarvam'. Hence it is known as 'Ishavasya Upanishad'. It is also called the 'Ishopanishad'.

The Ishavasya Upanishad says : "This entire world", says the above cited first verse, "is covered by the *Maya* of *Ishwar*. So, enjoy bliss, not by having the externals, but by rejecting the externals (*tena tyaktena*)."

The song sung by the maid-servant, who was seen to be dressed in tattered clothes, came out of the fullness of her heart. In other words, happiness or misery is a *vritti* of the mind and did not depend on the external conditions impinging on the mind.

Then Das Ganu understood the *Upanishad*. He found out that the girl's happiness lay not in the external *saree*, which she



had thrown away (*tena tyaktena*, which means : that being thrown away), but within herself. *Tena tyaktena* might mean being content with what God gives you. The girl was happy because she was contented. Thus, Baba taught the Ishavasya Upanishad to Das Ganu through an untutored and uneducated girl.

Once, while powering himself up to set out for *kirtan*, Das Ganu Maharaj dressed up in taste, and placed a glittering turban on his head. Just prior to his leaving Shirdi for performing *kirtan*, he came to the Dwarkamai-Masjid to seek Baba's permission. Sai looked at him with His quizzing eyes, wondering what prompted him to dress up like a bridegroom. Then, Baba asked him to shun this spectacular display of pomp and pageantry by removing all the paraphernalia, including the turban that rested proudly on his head. Das Ganu immediately withdrew the entire kit of pompous garments - the coat, the *uparni* and placed them at His feet. (Shri Sai Sat Charita, Chapter 15)

The only way to secure happiness in life is by limiting the wants. It is incorporated in the first Verse of the Ishavasya Upanishad. It reads : "All we find in this ephemeral world are created by God. Let us use them only to the minimum extent and let us not snatch the wealth belonging to others."

True wealth and joy lie within man. Thus, one must accept whatever comes one's way.

In actual theistically oriented religious praxis, it signifies the discarding of all the obstacles that prevent God from filling our pure emptiness.

The Nobel Laureate Rabindranath Tagore also swims purposely around the same point of view in his *Gitanjali* : Song VII, and emphasizes :

"My song has put off her adornments.

She has no  
pride of dress and  
decoration.

Ornaments  
would mar our union;  
they would  
come between thee  
and me; their jingling  
would drown thy  
whispers."



(Contd. on Page 34)

## Sai Baba answered our prayer by His love and care on us

On the 27<sup>th</sup> of September 2018, my wife Dr. Pragati and I went to Vijayawada with all our best wishes to make our daughter Akshara feel special on her birthday. She is pursuing the B. Tech. course there at the SRM University Amaravati, Guntur, Andhra Pradesh.

While returning the next, and after travelling 20 k.m. on highway, the tyre of our car blew. It was a sunny afternoon... 3 p.m....; no one was available to help on the solitary highway...; my wife and I were left stranded. My wife is a very staunch devotee of Shirdi Sai Baba.

She started trying to stop passersby; but they paid no heed to assistance needed. One truck driver came across and offered help. He offered to replace the blowout tyre with the stepney tyre that already had been punctured once. He took tools out and started trying to remove the tyre. But, the screws wouldn't budge. The thread had got completely eroded making it impossible for the wrench to get a grip. The driver gave up and asked me to try help from puncture shop, somewhere 5 k.m. away by catching a tempo.

In a state of confusion and being unable to decide what to do, I reluctantly got into a tempo and left for unknown puncture shop, leaving my wife - alone in the company of that truck driver - with gold ornaments on her.

After travelling 5 k.m., I reached a puncture shop. The mechanic, after knowing the problem, dismissed it as hopeless, and advised to call a showroom. The nearest available showroom in Vijayawada was 30 k.m. away.

I ordered for a cab, thinking of dropping my wife, and myself staying back and wait for showroom guy. With this plan in mind, I started back reverse again taking another tempo back. It took 30 minutes to execute the entire plan.

All the way back, fear about the safety of my wife kept obsessing me. Lo! What I saw on my return to the spot! There were two guys standing with the truck driver... and, the burst

tyre was already swapped to the stepney tyre. My wife told me the following happening...

After I left, a highway patrol car came there; they asked my wife the problem... tried their hand at changing the tyre... didn't succeed... and ultimately advised her to get showroom people... tow the car, and meanwhile stay inside the car with AC on and doors locked. With this cool advice, they left.

Now, 10 minutes after this, while I was still away, suddenly two guys became visible to my wife coming from the opposite direction directly to the car... stopped and asked my wife, if they could be of some help. She thought, I had sent them from some puncture shop. But, no... Her assumption was wrong! On being asked, they replied that they were coming from some bike showroom in opposite direction! Immediately



they took some tools out from the bag, they were carrying with them. They changed the tyre in 5 minutes.

That truck driver still standing there found himself mesmerized by the magic done by the duo. My wife offered Rs. 100 to them, which they happily accepted; and as they were ready to leave, I arrived back.

I thanked them and took out my wallet to pay them their labour. But, my wife told me that she had already paid. I asked them, whether I should continue on my journey, since the stepney tyre had already got punctured once. They told me to go to Eluru town, 20 k.m. forward... get all 4 tyres changed and proceed to Rajahmundry.

Then, they disappeared in the same direction they came from.

Following their advice, we proceeded for Eluru town and reached there safely. I drove straight to the MRF tyre showroom and asked them to change all the tyres. It was a great surprise... They could not take out any screw of any tyre even with machinery, and told me, it was impossible, but with only one option i.e. to break all the screws; and finally, they had to do that. They took 1 hour to break all the 16 screws.

It was then that it dawned upon me and my wife, how Sai Baba had responded within no time. He provided with instant remedy, and advised further course as well.

How 'two people' carrying tools 'divinely' come on that isolated highway and do the job bewilderingly, and accept a little amount of Rs. 100.



Now, I remember in retrospect : Two things happened incidentally on September 27. The morning before we started from Rajahmundry, we donated a small sum of Rs. 50,000/- to the temple of Shirdi Sai Baba, being constructed in Rajahmundry. A brochure (picture attached) was given to us. I carried it with me.

Before we started our journey that day, a friend of mine came and gave us some Shirdi *Prasad* and a small *Moortee* (statuette) of Baba. He had lately come back from his Shirdi pilgrimage; and we carried this *Prasad* and *Moortee* in our car with us. Both these valuable remained with both of us all along.

Sai Baba answered our prayer by His love and care on us.

We bow at His Lotus Feet.

**- Dr. M. Phani Kumar**

Neurosurgeon  
54-9-8, Satya Classics,  
502, Adepalli Colony,  
A. V. Apparao Road,  
P. O. : Rajahmundry - 533 103,  
Andhra Pradesh.  
Mobile : (0)9959687272





## श्री साईं बाबा के एकादश वचन

शिर्डी की श्री भूमि पर, पड़ते जिनके पाँव।  
 अलाबला हर आपदा, टलें काल का दाँव।।  
 मेरी समाधि सीढ़ियाँ, चढ़ते जन जो आन।  
 आधि व्याधि भव रोग दुख, बिनसें निश्चित जान।।  
 पूरेगी मनसा सभी, समाधि सबकी आस।  
 श्रद्धा सबुरी जो धरे, मुझमें दृढ़ विश्वास।।  
 हो जाऊँ चाहे विदा, देह त्याग संसार।  
 आऊँगा मैं दौड़ के, सुन के भक्त पुकार।।  
 अनाद्यंत जीवंत मैं, जानो सत्य सुजान।  
 पाओ निज अनुभूति से, मेरा वचन प्रमाण।।  
 आ मेरे दर द्वार से, खाली गया न कोय।  
 झोली जिसकी ना भरी, दिखलाये जो होय।।  
 सिजदा मेरा जो करे, छोड़ अहम दुर्भाव।  
 सवाब वैसा ही मिले, जैसा जिसका भाव।।  
 वहन करूँगा सर्वदा, सकल तुम्हारा भार।  
 वचन न मेरा अन्यथा, होगा किसी प्रकार।।  
 माँगी सो पायी मदद, पूरी हुई मुराद।  
 हर फ़रियादी की यहाँ, सुनी गयी फ़रियाद।।  
 देह वचन मन प्राण से, मेरे सेवादार।  
 उनकी सेवा का सिला, मुझ पर सदा उधार।।  
 अटल सत्य साईं वचन, भक्त हुये वे धन्य।  
 मेरे चरणों में धनी, जिनकी प्रीत अनन्य।।

- मराठी से हिंदी भावानुवाद -

दास कुम्भेश

ई-मेल : [kumbhesh9@gmail.com](mailto:kumbhesh9@gmail.com) दूरभाष : (०२५०)२४६०१०० संचार ध्वनि : (०)९८९०२८७८२२

# श्री साईं बाबा... और ... हनुमान

**पूर्वोद्घात :** बाबा कभी-कभार नीमगाँव के बाबासाहेब डेंगले नामक भक्त के घर जाया करते थे। बाबासाहेब डेंगले के भाई नानासाहेब डेंगले जाली-नीमगाँव में रहते थे। उनके कोई संतान नहीं थी। इस कारण उन्होंने दूसरा विवाह भी किया; परन्तु उसका भी कोई लाभ नहीं मिला। तब उनके भ्राता बाबासाहेब डेंगले ने उनको शिर्डी जाकर साईं बाबा के दर्शन करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उत्प्रेरित किया। नानासाहेब के बाबा के दर्शन करने आने पर बाबा की उन पर सहज अनुकम्पा हुई और बाबा ने उन्हें पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। योग्य समय पर साईं नाथ का शुभाशीर्वाद फलीभूत होकर नानासाहेब को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इस कारण नानासाहेब की बाबा में अटूट श्रद्धा और सबुरी हो गयी और वे बारम्बार बाबा के दर्शन करने शिर्डी आने लगे।

बाबा का सुयश चहुँ ओर फैलने लगा। उसे सुन कर कोपरगाँव के स्थानीय सर्कल इन्स्पेक्टर गोपालराव गुंड भी उसी आशय से बाबा के दर्शन करने शिर्डी आये। उनके तीन पत्नियाँ थीं; फिर भी संतान प्राप्ति नहीं हुई थी। बाबा के आशीर्वाद से उन्हें भी पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। गोपालराव गुंड भी महाराज के अनन्य भक्त बन गये - “**एक भक्त गोपाल गुंड। जिसे बाबा की भक्ति प्रगाढ़। मुख में बसता नाम अखंड।**” (श्री साईं सत् चरित) एक बार उनके मन में विचार आया कि मस्जिद जीर्ण और खण्डहर हो चुकी है। अतः क्यों नहीं इसका जीर्णोद्धार किया जाये? - “**स्फुरण गोपाल गुंड का। जीर्ण मस्जिद का रूप निखारें सुंदर।**” (श्री साईं सत्



**चरित)** “मस्जिद का भी जीर्णोद्धार। होवे अपने हाथों से साकार। भक्त गोपाल गुंड ने किया निर्धार। तैयार करवाये पाषाण॥” (श्री साईं सत् चरित)

परन्तु, बाबा को श्री गुंड का यह निर्धारण पसंद नहीं आया और उन्होंने उन तराशे हुए पत्थरों (कातलों) को मस्जिद में नहीं लगाने दिया। वे लगाये हुए पत्थरों और खम्भों को बार-बार उखाड़ फेंकते। ‘तेरे मन कछु और है, कर्ता के मन कछु और।’ बाबा तो सर्वधर्म समभावी थे। “साईं हिंदू अथवा यवन वंशी। खात्री पूर्वक कोई न जाने॥ धोती पोती खंड योग। करते भोगते भक्तों के भोग॥” (श्री साईं सत् चरित) अतः वे चाहते थे कि मस्जिद से पहले शिर्डी के देव मंदिरों का जीर्णोद्धार हो - “देव मंदिरों के भी जीर्णोद्धार। करवाये अपार बाबा ने॥ तात्या पाटिल द्वारा शिर्डी में। शनि गणपति शंकर मंदिर के। ग्रामदेवी तथा मारुति मंदिर के। सुस्थित करवाते॥” (श्री साईं सत् चरित) “वहाँ के मारुति के मंदिर का महाराज ने ही जीर्णोद्धार करवाया तथा मंदिर का विस्तार करवाया।”

उपर्युक्त वर्णन से हमें ज्ञात होता है कि शिर्डी में स्थित सभी हिंदू देवी-देवताओं के प्रति बाबा की अपार श्रद्धा एवं निष्ठा थी; पर वातात्मज मारुति वीर हनुमान के वे समर्पित उपासक थे; क्योंकि उन्होंने भी वे ही गुण धारण किये हुए थे, जो ‘सकलगुणनिधान’ श्री हनुमान जी महाराज में पाये जाते हैं। हम यहाँ दोनों के गुण साम्य पर चर्चा करेंगे। बाबा हमेशा कहा करते थे कि मैं तो केवल परमेश्वर का सेवक - ‘बंदा’ हूँ। वे कभी ‘अनल हक्क’, अर्थात् ‘मैं ही परमेश्वर हूँ’ ऐसा कभी नहीं कहते थे। वे बारम्बार यही कहा करते थे, ‘यादे हक्क’, अर्थात् मैं परमेश्वर का स्मरण करता रहता हूँ। परन्तु, जो साईं भक्त ‘श्री साईं साईं’ नाम का स्मरण करते रहते हैं, मूल श्री साईं सत् चरित का प्रतिदिन एक अध्याय का पाठ करते हैं अथवा एक सप्ताह में पूरे श्री साईं सत् चरित का पाठ पूरा कर लेते हैं, उनके लिए बाबा सहज सुलभ हो जाते हैं और

वे उनको शुभ गति प्रदान करते हुए परमात्मा से मिलन करवा देते हैं। यह बात कई भक्तों के संस्मरणों से सिद्ध है। श्री साईं सत् चरित में कई स्थानों पर उल्लेख हुआ है कि साईं बाबा ने जिन भक्तों पर कृपा कर अपनी शरण में लिया, उनको उनके इष्ट देव के साक्षात् दर्शन तो करवाये ही, उनके लिए प्रभु मिलन का मार्ग भी प्रशस्त कर दिया।

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी ने श्री रामचरितमानस में श्री हनुमान जी महाराज का स्मरण 'रघुपतिप्रियभक्तं' कह कर किया है। नवधा भक्ति में श्री हनुमान जी से बढ़ कर श्री राम का अन्य भक्त नहीं है। भगवान् को प्राप्त करने का यदि सबसे सरल सुगम साधन है, तो वे श्री हनुमान जी ही हैं। क्योंकि श्री हनुमान जी महाराज ही भगवान् श्री राम के द्वार पर रख वाले (पहरेदार) हैं। उनकी आज्ञा के बिना श्री राम के धाम में कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता। श्री हनुमान जी महाराज के लिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'हनुमान चालीसा' में लिखा है - **“राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।”** जो भक्त श्री हनुमान जी महाराज की उपासना करते हैं, नित्य प्रति 'हनुमान चालीसा', 'सुंदर कांड' का पाठ करते हैं, उन पर श्री हनुमान जी महाराज शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं और उनको भगवान् श्री राम के साकेत धाम में प्रवेश करा देते हैं। **“जो यह पढ़े हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।”**

लोक व्यवहार में भी हम देखते हैं कि हम जब किसी बड़े अफसर, मंत्री-संत्री से मिलने जाते हैं, तो उनके द्वार पर हमें चपरासी, जमादार या चौकीदार बैठा मिलता है। यदि हमारी पहचान उससे नहीं होती है, तो वह साहब से मिलने में सौ रोड़े अटका देता है। वह कहेगा - अभी तो साहब व्यस्त हैं, वे ज़रूरी मीटिंग ले रहे हैं; अभी साहब से मिलने का समय नहीं है आदि-आदि। और यदि उससे हमारी जान-पहचान है, तो वह तुरंत चिक उठा कर कहेगा - जाइये-जाइये, अभी साहब फुर्सत में हैं; वे अखबार पढ़ रहे हैं और प्रसन्न मुद्रा में हैं। यही बात भगवान् के प्रमुख द्वार में प्रवेश कराने पर भी लागू होती है। यदि हम श्री हनुमान जी महाराज अथवा श्री साईं बाबा के उपासक हैं, भक्त हैं, तो वे प्रभु के लोक में

हमारा प्रवेश सुगमता, सरलता से करा देंगे और हमें भगवद् प्राप्ति हो जायेगी।

कई देवी-देवताओं के मंत्र सिद्ध करने में, उपासना करने में सौ झंझट हैं - शुद्धि का ध्यान रखो, व्रत - उपवास रखो, निश्चित मात्रा में जप करो आदि-आदि। पर, श्री हनुमान जी महाराज अथवा श्री साईं नाथ की उपासना करने में ऐसा कोई झंझट, नियम या उपनियम नहीं है। बस, सच्चे मन से भाव के साथ उनको पुकारो और वे आपकी सहायता के लिए दौड़े चले आयेंगे।

कई देवी-देवताओं को आने के लिए विविध वाहनों की आवश्यकता पड़ती है। आवश्यकता होने पर, समय पर वाहन न मिलने से किसी स्थान पर पहुँचना उनके लिए असम्भव होता है। कार वाले बड़े लोग तो देखते ही हैं कि जिस दिन आवश्यक कार्य होता है, ड्राइवर उसी दिन छुट्टी मारता है। परन्तु, श्री हनुमान जी महाराज और श्री साईं नाथ के साथ ऐसा कोई झमेला नहीं है। उनके न कोई वाहन है और न कोई ड्राइवर। उनको स्मरण करो और वे तुरंत छलांग लगा कर उपस्थित और आपको संकट से छुड़ा लेंगे। **“संकट ते हनुमान छुड़ावे। मन क्रम वचन ध्यान जो लावे।।”**

इसके अतिरिक्त साईं बाबा व श्री हनुमान जी महाराज यदि आप पर प्रसन्न हो जायें, तो आपको मालामाल करते हुए कार, कोठी, बंगला, नौकर-चाकर सब कुछ दिलवा सकते हैं। यह सामर्थ्य उनमें है। **“अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।”** दोनों के पास ही राम रूपी रसायन है - **“राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।”** उनका स्मरण ही आपको भगवान् से मिला देगा।

**- मदन गोपाल गोयल**

प्राचार्य (सेवा निवृत्त)

श्री राम अयन, इन्द्रगढ़ - ३२३ ६१३,

ज़िला बूंदी, राजस्थान.

ई-मेल : [gopalgoyal1963@gmail.com](mailto:gopalgoyal1963@gmail.com)

संचार ध्वनि : (०)९४६०५९४८९०,

८९४९४३७९३२





## SHRI SAI PUNYATITHI FESTIVAL 2018

### Shirdi News

Mohan Yadav

\* Public Relation Officer \*

Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

- Translated from Marathi into English by

Vishwarath Nayar

E-mail : [vishwarathnayar@gmail.com](mailto:vishwarathnayar@gmail.com)

Celebrating *Punyatithi* is a great blessing. There are lakhs of devotees of Shri Sai Baba worldwide...

These devotees come to Shirdi to seek their *Sadguru's* Blessings on Sai *Punyatithi*. The 100<sup>th</sup> annual *Punyatithi* festival of Shri Sai Baba was held by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi this year from Wednesday, October

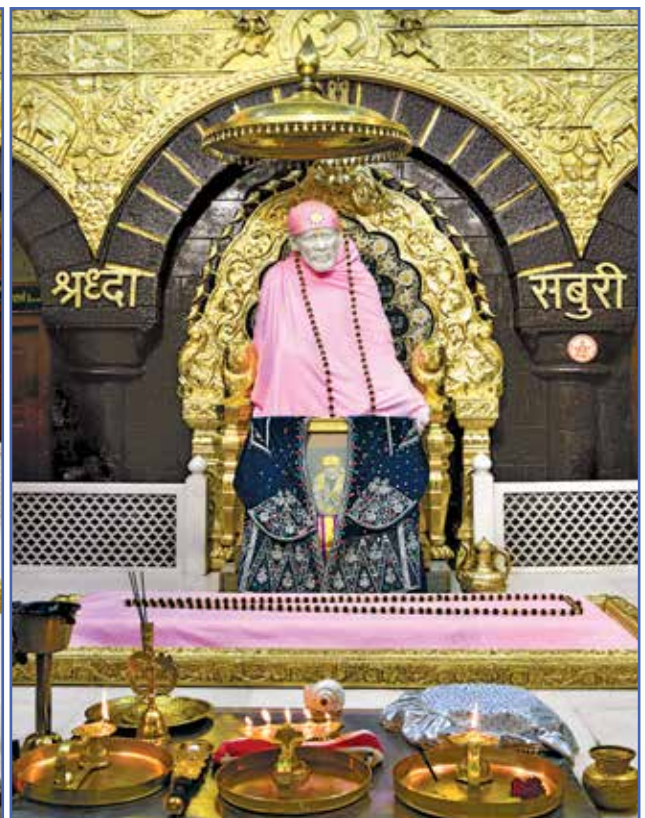


First Day, Wednesday, October 17, 2018



17, 2018 to Friday, October 19, 2018, in an

auspicious and enthusiastic environment.



*Kakad Aarati* was done at 4.30 a.m. on Wednesday, October 17, 2018, the first day of the festival. After the *Kakad Aarati*, a grand procession of Shri Sai Baba's Photo, 'Shri Sai Sat Charita' *Grantha* (holy book on Shri Sai Baba) and the *Veena* was taken out.

The Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam with the *Veena*, Trustee Sri Bhausaheb Wakchaure with the holy book 'Shri Sai Sat Charita' and Trustees, Adv. Mohan Jaykar and Sri Bipindada Kolhe with the Photo of Shri Sai Baba participated in the procession. Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer, Sou. Yogitaitai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors, Sri Suryabhan Game, Administrative Officer, villagers and Sai devotees were present in large numbers on the occasion. After the procession reached Dwarkamai, the *Akhand Parayan* (non-stop reading) of the holy book 'Shri Sai Sat Charita' commenced. Adv. Mohan Jaykar, Trustee of the Sansthan read the first chapter, Sou. Saraswati Wakchaure read the second, Sou. Yogitaitai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council read the third, Sou. Nalini



#### Procession of Shri Sai Baba's *Palkhi*

Haware read the fourth and Sou. Priya Kadam read the fifth chapter.

Shri Sai Baba was given the holy bath at



5.20 a.m. At 6.15 a.m. Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam and his wife Sou. Priya Kadam performed the *Padya Pooja* (Worship of the Holy Feet) of Shri Sai Baba in the *Samadhi Mandir*. At 12.30 p.m., the *Madhyanha Aarati* of Shri Sai Baba was done. At 4 p.m. the *Kirtan* programme by *H.B.P. (Hari Bhakta Parayan)* Sri Vivek Gokhale (Nrisinhawadi) was held. The *Dhoop Aarati* of Shri Sai Baba was done at 6.15 p.m.

From 7.30 p.m. to 10.15 p.m. 'Devbabhali', a drama was presented by Sri Prasad Kambli (Mumbai). At 9.15 p.m. a procession of Shri Sai Baba's *Palkhi* was taken out through the Shirdi village. *Shej Aarati* of Shri Sai Baba was done after the procession at 10.30 p.m. Sri Mahadev Jankar, Minister for Animal Husbandry and Dairy Development of Maharashtra State, availed the *Darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* on the occasion of the festival. Dwarkamai was kept open through-out the night for the *Akhand Parayan*.

### Main Day, Thursday, October 18, 2018

On Thursday, October 18, 2018, the main day of the festival, *Kakad Aarati* was done at 4.30 a.m. At 5 a.m. the *Akhand Parayan* of the holy *Grantha*, Shri Sai Sat Charita, concluded. After the *Parayan*, a grand procession of Shri Sai Baba's Photo, 'Shri Sai Sat Charita' *Grantha* and the *Veena* was taken out. The Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam and Trustee Adv. Mohan Jaykar with the Photo of Shri Sai Baba, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council Sou. Yogitai Shelke with the holy book and Trustee Sri Bipindada Kolhe with the *Veena* participated in the procession. The Chairman of the Sansthan Dr. Suresh Haware, Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal, Trustee Sri Bhausahab Wakchaure, Deputy Collectors, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, villagers and Sai devotees were present in large numbers on the occasion.

At 5.20 a.m. Shri Sai Baba was given the holy bath. At 6 a.m. the *Padya Pooja* of Shri Sai Baba was done and at 10.30 a.m. the ritual *Aaradhana* worship was done in the *Samadhi*





Mandir by Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan and his wife Sou. Nalini Haware. Dr.







Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Sri Chandrashekar Kadam, Vice Chairman, Sri Sadashiv Lokhande, Member of Parliament, Sri Bipindada Kolhe, Sri Bhausahab Wakchaure and Adv. Mohan Jaykar, Trustees, villagers and Sai devotees participated in large numbers in the *Bhiksha Zoli* programme organized through the Shirdi city at 9 a.m. Sri Uday Lalit, Justice of the Supreme Court and Sri Deepak Kesarkar, Minister of State for Home, Finance and Planning (rural) of Maharashtra State attended the *Kakad Aarati* of Shri Sai Baba, the procession of Shri Sai Baba's Photo, 'Shri Sai Sat Charita' Grantha and the Veena and the *Bhiksha Zoli* programme. *Kirtan* programme was presented by H.B.P. Sri Vivek Gokhale at 10 a.m.

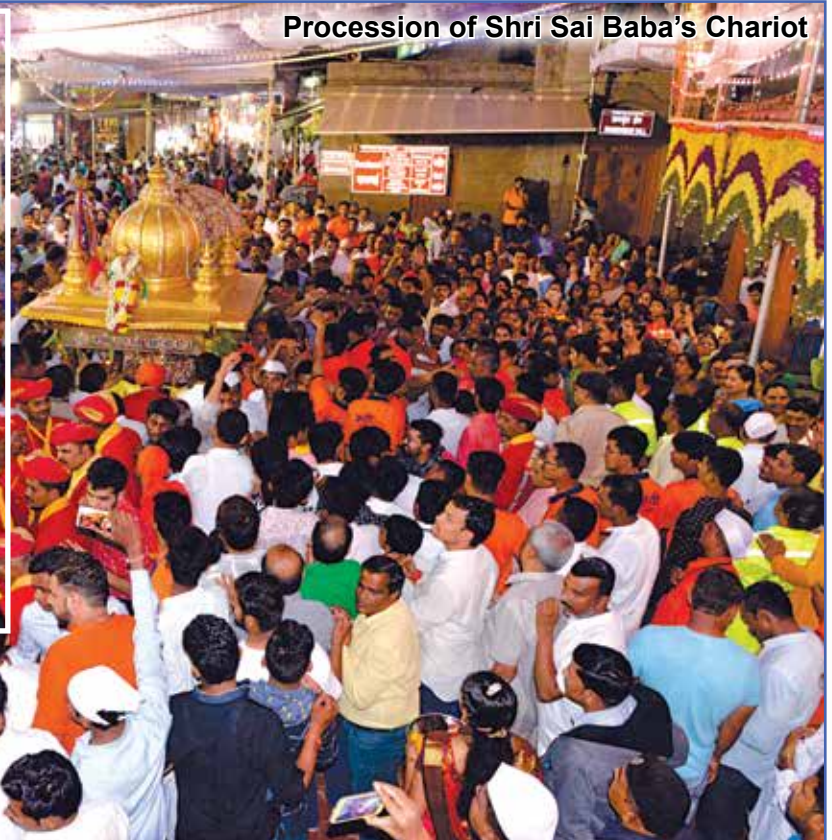
The *Madhyanha Aarati* of Shri Sai Baba was done at 12.30 p.m. At 5 p.m. crossing the frontier ritual was done in the Khandoba temple. *Dhoop Aarati* was done at 6.15 p.m. From 7.30 p.m. to 10.30 p.m. 'Sai Bhajan Sandhya' programme was presented by Sri Mahesh Kale and Sri Rahul Deshpande (Mumbai). The audience lauded the programme very much. At



9.15 p.m. Shri Sai Baba's Chariot was taken out through the Shirdi town in a procession. Local bands of bhajans, cymbals, drums and lezim, villagers and Sai devotees participated in large numbers in the procession. Being the main day of the festival, the *Samadhi Mandir* was kept open for Sai devotees throughout the night for *Darshan*. Artistes performed their programmes on the stage adjoining the *Samadhi Mandir* from 11 p.m. to 5 a.m. the next day.



Procession of Shri Sai Baba's Chariot



### Concluding day, Friday, October 19, 2018

On Friday, October 19, 2018, the

concluding day of the festival, Shri Sai Baba was given a holy bath at 5.05 a.m. At 6 a.m. the *Padya Pooja* of Shri Sai Baba was done in the *Samadhi Mandir* and the *Rudra Abhishek*

worship was done in the *Gurusthan* by the Chief Executive Officer of the Sansthan Smt. Rubal Agarwal and Sri Prakher Agarwal. After that, the *Madhyanha Aarati* was done at 12.10 p.m. after the *Gopalkala Kirtan* by H.B.P. Sri Vivek Gokhale at 10 a.m. and the *Dahi-handi* programme. The *Dhoop Aarati* of Shri Sai Baba was done at 6.15 p.m. From 7.30 p.m. to 10.15 p.m. the Bhajan Sandhya programme



was presented by the renowned singer Smt. Anuradha Poudwal (Mumbai). The audience lauded the programme very much. The *Shej*



Aarati of Shri Sai Baba was done at 10.30 p.m.  
Attractive floral decorations were done for

Shri Sai Baba's *Punyatithi* festival in the *Samadhi Mandir* and the temple premises, *Dwarkamai*, *Chavdi* and *Gurusthan* from the donation made



by Sai devotee Smt. Vijaya Naidu (Hyderabad). Similarly, the spellbinding electric lighting was done by *Dwarkamai Mandal* (Mumbai) and the grand display of *Brahmandnayak* was erected at the gateway.

1,14,062 *ladoo* packets were sold during the festival period and 2,45,000 *bundi-prasad* packets were distributed free to Sai devotees in the *Darshan* queue. About 2.75 lakh devotees availed the free *Prasad*-meal during the festival.



Additional facility to provide tea, coffee and milk facilities was made at the Sai Ashram,

Dharmashala, Bhakta Niwas-sthan (500 rooms), Dwaravati Bhakta Niwas-sthan and also the ground and first floors in the Shanti Niwas building, to facilitate easy availability of tea and coffee to the Sai devotees in the *Darshan* line and the premises. Along with this First Aid center facility for the convenience of Sai devotees were provided in the *Darshan* line, temple premise, New Bhakta Niwas-sthan, Sai Ashram and the New Shri Sai Prasadalaya. Ambulances were stationed at the temple premise, New Bhakta Niwas-sthan and the New Shri Sai Prasadalaya for emergency services.

The Deputy Collectors of the Sansthan, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Executive Officer Sri Babasaheb Ghorpade, Deputy Superintendent of Police Sri Anand Bhoite, all Aoministrative Officers, all head of departments and employees under the guidance of Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer and Trustees took special efforts for the successful conduct of the Shri Sai *Punyatithi* festival.





Wednesday, October 10, 2018 : Sri Ashok Chavan, Former Chief Minister of Maharashtra...

## One-Day *Parayan* of Shri Sai Sat Charita



The one-day *Akhand Parayan* (non-stop reading) of the Shri Sai Sat Charita *Pothi* organised by the Shree Saibaba Sansthan

Trust, Shirdi on the occasion of the Centenary Year Celebrations of Shri Sai Baba's *Samadhi* on Thursday, October 11, 2018 commenced with the worship of the Photo of Shri Sai Baba, the Shri Sai Sat Charita *Pothi* (holy book) and the *Kalash* (holy pitcher) and the reading of 'Stavanmanjari' by the Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam, the Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal and other dignitaries.

A procession of the holy *Grantha* Shri Sai Sat Charita along with Shri Sai Baba's Photo, the *Veena* and the *Kalash* was taken out on the occasion of the one-day *Akhand Parayan* of Shri Sai Sat Charita. The Vice Chairman of the Sansthan Sri Chandrashekhar Kadam with the *Veena*, the Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal with the Shri Sai Sat Charita *Pothi*, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council Sou. Yogitatai Shelke with the *Kalash* and the Deputy Collectors, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil with the Photo of Shri Sai Baba participated in the procession. Sou. Priya Kadam, Sou. Saraswati Wakchaure, Sou. Manali Nikam, Sri Suryabhan Game, Administrative Officer, villagers and Sai devotees were present in large numbers on the occasion.

Female readers were given the opportunity to do the reading throughout the day. Each 4 hour batches were constituted for the *Parayan* that commenced from 7 a.m. The *Akhand Parayan* concluded on Friday, October 12, 2018.



After the *Parayan* a grand procession was taken out through the Shirdi village. Artistes from various states participated in this procession. Similarly, bands of *sambal, shenai, duff, shing-tutari-choughada*, cymbals, drums, dances with traditional costumes, various displays, southern musical instruments, scenes in Sai attire based on Shri Sai Sat Charita were included in the procession.



## One-Day Diagnostic Camp

Sri Chandrashekhkar Kadam, Vice Chairman of the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi inaugurated the one-day Diagnostic Camp organised by the Sansthan on the occasion of the Centenary Year Celebrations of Shri Sai Baba's *Samadhi* on Saturday, October 13, 2018.

Smt. Rubal Agarwal, the Chief Executive Officer of the Sansthan, Sou. Yogitaitai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council, Sri Suryabhan Game and Sri Ashok Auti, Administrative Officers, Dr. Vijay Narode, Deputy

Medical Director, Dr. Sou. Maithili Pitambare, Medical Superintendent, doctors who came for the camp from outside Dr. Samrat Tawari, Dr. Ramarao, Orthopaedic Specialist from Hyderabad, H.C.G. Manavata Cancer Center, Medical Officers and their colleagues from Nasik, Medical Officers and employees of the Sansthan, patients and their kin were present at the programme presided by Sri Kadam.

1476 patients registered at the camp. Sri Prakash Gangavane of Girish Optical, Mumbai checked 852 patients with poor eye sight and in need of spectacles. 350 patients were checked for joint pain and joint replacement. 110 patients suffering from cancer were checked. Also 164 patients were investigated for congenital deformities, joined, twisted or abnormal growth, facial scars, cleft lips and palate, deformed ears and nose and disfigurements caused by accidents. Patients investigated at this camp will be treated and operated in the hospital of the Sansthan.

NCORD Health Card LLP and Cellbeans Healthcare Informatics Pvt. Ltd. of Pune jointly donated computer systems costing Rs. 5 crores to the Sansthan's hospital on the occasion. Also, these companies will maintain these systems for 10 years.

Dr. Dharaskar, Dr. Prashant Kale, Dr. Banes Gaikwad, Dr. Bidgar, Dr. Amit Naikavade, Dr. Vishal Patel, male and female nurses and employees of the Sansthan's hospital took special efforts for the successful conduct of the camp.



**Sunday, October 14, 2018** : On behalf of the Sansthan the Sansthan's Deputy Collector Sri Dhananjay Nikam felicitated Sri Chandramouli and his 22 fellow Sai devotees who came from Chennai to Shirdi on foot for the *Darshan* of Shri Sai Baba. Sri Chandramouli comes to Shirdi from Chennai every year on foot since the last eight years...



On behalf of the Sansthan the Sansthan's Chief Executive Officer Smt. Rubal Agarwal felicitated the Shiv Sena Party Chief Sri Uddhav Thackeray with family...



**Sunday, October 21, 2018** : Shiv Sena Party Chief Sri Uddhav Thackeray with family; flanked by the Environment Minister of Maharashtra State Sri Ramdas Kadam and the Chief Executive Officer of the Sansthan Smt. Rubal Agarwal...



**Friday, November 2, 2018** : Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan inaugurated the new state of the art 128 Slice CT Scan machine, installed in the Shri Sai Baba Hospital run by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, costing Rs. 6.53 crores, replacing the old 64 Slice CT Scan machine.

Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer, Sri



Bhausaheb Wakchaure, Trustee, Sou. Yogitai Shelke, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council, Sou Nalini Haware, Sri Dhananjay Nikam and Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collectors, Sri Babasaheb Ghorpade, Deputy Executive Officer, Dr. Vijay Narode, Medical Director, Dr. Sou. Maithili Pitambare, Medical Superintendent, Dr. Pritam Wadgave, Sri Suryabhan Game and Sri Dilip Ugale, Administrative Officers, Dr. Vyavahare,



Radiologist were among the dignitaries present on the occasion.

The new machine is the most modern, only machine in the Ahmednagar district and is much faster with new technology system than the earlier machine.

Purchase orders have been issued for the purchase of 127 machines at a cost of Rs. 35 crores for the Sansthan's Shri Sai Nath Hospital and Shri Sai Baba Hospital. 90 various machines have been installed till date. These

including Cathlab, CT Scan, Colour Doppler, Dialysis, X-ray, OT Table and Multi-para Monitor, a new MRI machine will be commissioned on Saturday, December 15, 2018. The balance machines will be functional in the coming two months.

Smt. Rubal Agarwal, Chief Executive Officer of the Sansthan informed that in the last 15 years this was the first time that ultra modern machineries on such a large scale are being installed in these two hospitals of the Sansthan.



**Wednesday, November 7, 2018** : The Chief Executive Officer of the Sansthan Smt. Rubal Agarwal and Sri Prakher Agarwal performed the Laxmi-Kuber worship in the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* on the occasion of Deepavali. The Sansthan's Trustee Sri Bhausahab Wakchaure, Sou. Saraswati Wakchaure, Trustee and Chairperson of the Shirdi Municipal Council Sou. Yogitaitai Shelke, villagers and Sai devotees graced the occasion.

### करिश्मा साई का...

शिर्डी आ के देख, करिश्मा साई का,  
दर्शन पा के देख, करिश्मा साई का...  
मुँह से कुछ ना बोल तू पगले, हाल तेरा वह जाने...  
तेरी खातिर खोल के रख देगा, वो सारे खजाने...  
पास तू आ के देख, करिश्मा साई का...  
तेरे अंदर कुछ भी नहीं है, तू है खाली गागर...  
तेरा रक्षक तेरा साई, है रहमत का सागर...  
प्यास बुझा के देख, करिश्मा साई का...

पल दो पल के काले बादल, पल में छंट जायेंगे...  
साई सुमिरन हर पल कर ले, दुख ये घट जायेंगे...  
दीप जला के देख, करिश्मा साई का...  
कर पैदा आहों में असर, वो दौड़ के आ जायेगा...  
नदियाँ - परबत सारे बंधन, तोड़ के आ जायेगा...  
आँख उठा के देख, करिश्मा साई का...

**- साई दास विनय घासवाला**

१०/३०२, लाभ रेसिडन्सी,  
अटलदरा, वडोदरा - ३९० ०१२, गुजरात.  
संचार ध्वनि : (०) ९९९८९९०५६४

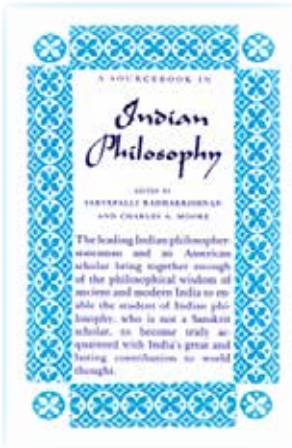
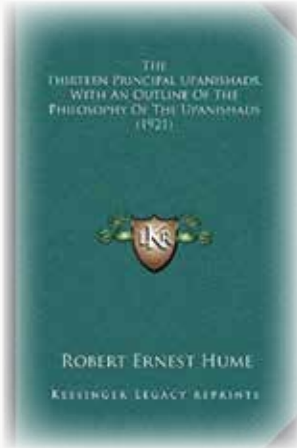


Thursday, November 15, 2018 : Actress Smt. Shilpa Shetty with family flanked by the Deputy Collector of the Sansthan Sri Manoj Ghode Patil...



Sri Manoj Ghode Patil, Deputy Collector of the Sansthan felicitated the actress Smt. Shilpa Shetty...

(Contd. from Page 14)



Born in Ahmednagar, Bombay Presidency, India, Robert Ernest Hume (20 March 1877- 4 January 1949) was an outstanding authority on the living religions of the world. He was a Professor of the History of Religions in the Union Theological Seminary in New York. Professor Hume wrote three books: 1. The Thirteen Principal Upanishads in which is a most accurate and in-depth work on translating them from the Sanskrit, 2. The World's Living Religions in 1924 which received great acclaim and was the only book besides the Bible to be placed in the time capsule at the 1939 New York's World Fair and appeared in its 29th edition in 1944, and 3. The Treasure House of the Living Religions in 1932, a real masterpiece.

Professor Hume renders the first verse of the Ishavasya Upanishad thus :

“By the Lord (Isha) enveloped must this all be  
Whatever moving thing there is in the moving  
world.

With this renounced, thou mayest enjoy.

Covet not the wealth of anyone at all.”

(Quoted in A Source Book in Indian Philosophy by Sarvepalli Radhakrishnan & Charles A. Moore, 1957)

Thus Das Ganu realized that all our feelings of pain and pleasure depend upon the attitude of our mind. On thinking deeply over this incident, he realized that a man ought to enjoy whatever God has bestowed on him in the firm conviction that He besets everything, from behind and before, and on all sides and that whatever is bestowed on him by God must be for his good. In this particular case, the impoverished condition of the poor girl, her torn rag and the new Saree, the donor, the dance and the acceptance were all parts of the Lord Sai and pervaded by Him. Hence, Das Ganu got a practical demonstration of the lesson of the Upanishad - the lesson of contentment with one's own lot in the belief that whatever happens is ordained by God, and is ultimately good for us.

– Dr. Subodh Agarwal

‘Shirdi Sai Dham’,  
29, Tilak Road, Dehra Dun - 248 001,  
Uttarakhand.

Mobile : 09897202810

E-mail : [subodhagarwal27@gmail.com](mailto:subodhagarwal27@gmail.com)



# श्री साईं पुण्यतिथि उत्सव - २०१८ मुख्य दिन (गुरुवार, दिनांक १८.१०.२०१८)



संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे व उनकी सुविद्य पत्नी सौ. नलिनी हावरे के हाथों श्री साईं बाबा की विधिवत् पादपूजा...



संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे व उनकी सुविद्य पत्नी सौ. नलिनी हावरे के हाथों समाधि मंदिर में आराधना विधि...



भिक्षा झोली कार्यक्रम में संस्थान के अध्यक्ष डॉ. सुरेश हावरे, उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर कदम, सांसद श्री सदाशिव लोखंडे, विश्वस्त श्री विपीनदादा कोल्हे, श्री भाऊसाहेब वाक्चौरे, अंड. मोहन जयकर, ग्रामवासी और साईं भक्त...

श्री साई पुण्यतिथि उत्सव - २०१८ समापन दिन (शुक्रवार, दिनांक १९.१०.२०१८)



संस्थान की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल और श्री प्रखेर अग्रवाल के हाथों श्री साई बाबा की विधिवत् पादपूजा...



संस्थान की मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती रुबल अग्रवाल और श्री प्रखेर अग्रवाल के हाथों गुरुस्थान में रुद्राभिषेक...

समाधि मंदिर में दही-हंडी कार्यक्रम...

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा मे. टैको व्हिजन्स प्रा. लि., १०५ ए, बी, सी, गर्वनमेंट इन्डस्ट्रियल इस्टेट, चारकोप, कांदिवली (प.), मुम्बई - ४०० ०६७ में मुद्रित और साई निकेतन, ८०४ बी, डा. आम्बेडकर रोड, दादर, मुम्बई - ४०० ०१४ में प्रकाशित। \* सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी \* कार्यकारी सम्पादक : विद्याधर ताटे